राष्ट्रीय ज्ञान तंत्र से बहेगी बौद्धिक समृद्धि की बयार

कानपुर मुख्य संवाददाता: देश में प्रस्तावित राष्ट्रीय ज्ञान तंत्र (नेशनल नॉलेज नेटवर्क) से बौद्धिक समृद्धि की बयार बहेगी। शनिवार को यहाँ छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय के 26वें दीक्षांत समारोह के मुख्य अतिथि राष्ट्रीय सलाहकार परिषद व योजना आयोग के सदस्य डॉ.नरेन्द्र जाधव ने यह जानकारी दी। दीक्षांत भाषण देते हुए डॉ.जाधव ने कहा कि भारत सरकार जिस राष्ट्रीय ज्ञान तंत्र की परिकल्पना कर रही है, वह पूरे भारत का आंतरिक नेटवर्क होगा। जो सुरक्षित व विश्वसनीय संपर्क (कनेक्टिविटी) के साथ सभी शोध संस्थानों, प्रयोगशालाओं, पुस्तकालयों, अस्पतालों व कृषि सहित अलग-अलग संकायों से सीधे जुड़ेगा।

अगले तीन साल में इस नेटवर्क से पांच हजार संस्थान जुड़ जाएगी, जिससे संकायों की सीमाएं टूटेंगी। उन्होंने कहा कि हम इससे ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था की ओर आगे बढ़ रहे हैं। ज्ञान तंत्र से हम सभी विधाओं व संकायों की जानकारी आसानी से एक दूसरे तक सुलभ करा सकेंगे। उन्होंने कहा कि संकट को अवसर में बदल कर आगे बढ़ना भारतीयों की विशेषता है। 1991 में आर्थिक बदलावों के रूप में हमने यही किया। इसी के परिणाम स्वरूप हमारी 3.6 की विकास दर 1991 के बाद बढ़नी शुरू हुई और 2001 में 6 प्रतिशत पहुंचने के बाद 2008 में 9 फीसदी से भी आगे निकल गयी। 2009 में जब पूरी दुनिया में आर्थिक संकट आया, तब भी भारत की विकास दर 8.6 फीसदी तक ही नीचे गिरी। यही नहीं, अब जब पूरी दुनिया में नकारात्मक विकास दर चल रही है, भारत में विकास दर 7 फीसदी से नीचे नहीं गिरी।

• योजना आयोग के सदस्य डॉ.नरेन्द्र जाधव का दीक्षांत भाषण

सफलता के नौ सूत्र

1. **लक्ष्य ऊंचे रखें** – छोटे लक्ष्य निर्धारित करना अपराध है। जितना ऊंचा सोचेंगे, उतने ही अच्छे परिणाम प्राप्त किये जा सकेंगे।
2. **लक्ष्य प्राप्ति की जिजीविषा** – लक्ष्य प्राप्ति की जिजीविषा अत्यधिक हो। यह आग भीतर तक जले और इसे सामान्य रूप में (कैजुअली) कतई न लें।
3. **कठिन परिश्रम जरूरी** – कठिन परिश्रम का कोई विकल्प नहीं है। सफलता में प्रतिभा का हिस्सा एक फीसदी ही होता है, शेष परिश्रम ही है।
4. **समय प्रबंधन पर जोर** – टाइम पास से खराब शब्द कोई नहीं है। जो लोग टाइम पास करते हैं, वे जिंदगी की परीक्षा में फेल हो जाते हैं।
5. **शार्ट कट कभी न चुनें** – सफलता का कोई शार्टकट नहीं होता है। शार्टकट चुनने वालों को बुरी तरह से असफलता का सामना करना पड़ता है।
6. **समझौते कभी न करें** – 'सब चलता है' की सोच से सफलता का रास्ता रुकता है। इसलिए प्रयासों व चिंतन का समग्र स्वरूप परिमार्जित होना चाहिए।
7. **माता-पिता सबसे जरूरी** – माता-पिता का स्थान छत जैसा होता है। जब वे नहीं होते हैं, तब समझ में आता है। उनकी भावनाओं का सम्मान करें।
8. **सामाजिक जिम्मेदारी निभाएं** – समाज से हम अपने जीवन में बहुत कुछ लेते हैं। सफलता के बाद समाज को वापस कर जिम्मेदारी जरूर निभाएं।
9. **सकारात्मक सोच रखें** – हमेशा अपना परीक्षण करते रहें। बदलाव को स्वीकार कर सकारात्मक सोच के साथ चलें, आगे बढ़ने से कोई नहीं रोक सकता।

शोध की संख्या पर नहीं, गुणवत्ता पर हो जोर

विश्वविद्यालय में आयोजित दीक्षांत समारोह में फैज फातिमा को मैडल देते राज्यपाल बीएल जोशी, योजना आयोग के सदस्य डॉ. नरेंद्र जाधव व कुलपति अशोक कुमार।

कानपुर, मुख्य संवाददाता : उत्तर प्रदेश के राज्यपाल बीएल जोशी का मानना है कि विश्वविद्यालयों में शोध की संख्या पर नहीं, गुणवत्ता पर जोर होना चाहिए। शनिवार को यहां छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय के 26वें दीक्षांत समारोह को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि विविधतापूर्ण शोध के साथ उनकी अंतर्राष्ट्रीय पहचान भी जरूरी है।

श्री जोशी ने कहा कि विश्वविद्यालय में कैंसर शोध केंद्र की स्थापना एक स्वागत योग्य कदम है। सभी क्षेत्रों में शोध मानकों के अनुरूप व गुणवत्तायुक्त होने चाहिए। ऐसी शोध परियोजनाएं संचालित की जाएं, जो हमें नोबेल पुरस्कार तक दिलाने का पथ प्रशस्त करें। नयी प्रौद्योगिकी व सूचना तंत्र के सतत विकास के कारण विद्यार्थियों को अपने कार्य व परिवेश में नयी परिस्थितियों का सामना करना पड़ रहा है। इन चुनौतियों का सामना करने के लिए शिक्षा की गुणवत्ता को निरंतर परिवर्तित व परिमार्जित कर उपाधि कार्यक्रमों को परिवर्धित मूल्य प्रदान करना होगा। उन्होंने कहा कि स्नातक उपाधि प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राएं ऐसे समय पर अपने कामकाजी जीवन में प्रविष्ट हो रहे हैं, जब भारत अग्रगामी देशों में अपना उचित स्थान बनाने की दिशा में अग्रसर है। यह कायाकल्प प्रारंभ हो चुका है और अगले दो-तीन दशकों में इसका प्रभाव दिखेगा। नयी पीढ़ी को कुछ नयी चुनौतियों का सामना करने के साथ द्रुतगामी आर्थिक परिवर्तनों से लाभान्वित होने का मौका भी मिलेगा।

कुलपति प्रोफेसर अशोक कुमार ने अपनी वार्षिक रिपोर्ट में बताया कि विश्वविद्यालय अंतर्राष्ट्रीय रिश्तों को बढ़ावा देने पर भी जोर दे रहा है। जापान व मारीशस के साथ इसकी शुरुआत हो गयी है। समारोह में 1650 स्नातक, परास्नातक व डिप्लोमा उपाधियों के अलावा 405 पीएचडी व दो डीलिट उपाधियां भी प्रदान की गयीं। 89 मेधावी छात्र-छात्राओं को कुलाधिपति, कुलपति व प्रायोजित पदकों से सम्मानित किया गया।

दीक्षांत समारोह के बाद खुशी मनाते छात्र-छात्राएं। जागरण